अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय 2

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

"व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारंभ करते है, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है, ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।" (बेस्ट–1959)

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन कार्य है। समस्या से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह विज्ञान के क्षेत्र का हो या सामाजिक विज्ञान का, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य चरण है, क्षेत्रीय अध्ययन में जहां– उपलब्ध उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्तों का संकलन का कार्य होता है। वहां संबंधित साहित्य के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है।

- सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छी प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
- ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् भी ज्ञान बढ़ाया जा सकता है।
- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अंतरदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
- पूर्व अनुसंधान से अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
- सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.2 शोध समस्या से संबंधित पूर्व शोध कार्य

सामान्य विद्यालय आवासी एवं गैर आवासीय ब्रिजकोर्स के छात्रा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

शोधकर्ता (नर्जीवत) श्री राजकुमार विश्वकर्मा, (2005–06), शासकीय शिक्षा स्नातकोत्तर महाविद्यालय छतरपुर (म.प्र)

शोध समस्या के उद्देश्य

- सामान्य विद्यालय के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव ज्ञात करना।
- शिक्षा गारंटी शाला के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव ज्ञात करना।
- सामान्य विद्यालय व शिक्षा गारंटी शाला के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- आवासीय तथा गैर आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सामान्य विद्यालय, शिक्षा गारंटी शाला तथा आवासीय गैर–आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक– बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर वातावरण का तुलनात्मक प्रभाव ज्ञात करना।

शोध समस्या से संबंधित परिकल्पनायें

- सामान्य विद्यालय के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- शिक्षा गारंटी शाला के बालक तथा बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- सामान्य विद्यालय व शिक्षा गारंटी शाला के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

- आवासीय तथा गैर–आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं ।
- सामान्य विद्यालय, शिक्षा गारंटी शाला तथा आवासीय व गैर–आवासीय ब्रिजकोर्स पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

- 1 और 2 परिकल्पनाओं में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- सामान्य विद्यालय व शिक्षा गारंटी शाला के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में आंशिक रूप से सार्थक अन्तर हैं।
- आवासीय तथा गैर आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में आंशिक सार्थक अंतर है।
- सामान्य विद्यालय शिक्षा गारंटी योजना, आवासीय–ब्रिजकोर्स तथा गैर–आवासीय ब्रिजकोर्स के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव में 1 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर हैं ।
- समस्त समूहों के बालक/बालिकाओं के पारिवारिक वातावरण के प्रभाव (ग) तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि (Y) में कोई सह–संबंध नहीं पाया गया है।
- पारिवारिक वातावरण का प्रभाव 16.67% पर खराब 68.33% पर सामान्य तथा 15.00% बालक/बालिकाओं पर अच्छा प्रभाव हैं।
- पारिवारिक वातावरण के प्रभाव हेतु बालक/बालिकाओं की तीन श्रेणियों में आवृत्ति वितरण करने से काई सार्थक अंतर प्राप्त नहीं हुआ।

2.3 कुछ शोध कार्य इससे संबंधित निम्नानुसार है

- **(1) शीर्षक – ''छात्रावासी एंव गैर छात्रावासी छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।''**
- शोधकर्ता–श्री पी.एन अहिवार, 2003–04, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर।

परिकल्पनायें

- ग्रामीण छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- शहरी छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण गैर–छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- शहरी गैर–छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- शहरी व ग्रामीण छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- ग्रामीण छात्रावासी गैर–छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण छात्रावासी, गैर–छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- शहरी छात्रावासी, गैर–छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।
- छात्रावासी, गैर छात्रावासी छात्रों की उपलब्धि स्तर में काई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

निष्कर्ष – समस्त परिकल्पनायें क्रमांक–1 से 9 तक की 'सत्य' पायी गयी।

शीर्षक – दुर्ग सम्भाग के नवोदय एवं आवासीय विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन।''

शोधकर्ता – श्री अर्जुन लाल मेश्राम, 1992, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर।

परिकल्पनायें

नवोदय विद्यालय के छात्र/छात्राओं का शैक्षिक विकास आवासीय विद्यालयों के छात्र/छात्राओं की अपेक्षा अच्छा होता हैं।

- नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं का व्यवहार आवासीय विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं से अधिक प्रभावशाली होता है।
- **निष्कर्ष** – दोनों परिकल्पनायें क्रमांक–1 व 2 सत्य हैं।
- (3) **शीर्षक – ''निम्न सामाजार्थिक स्तर के परिवारों में विद्यमान जनसंख्या संबंधी मान्यताओं का उनके पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''**

➢ **शोधकर्ता** – कु. सुनीता टेम्भुरने, 1992, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर।

उद्देश्य

➢ निम्न सामाजार्थिक स्तर के परिवारों में पायी जाने वाली जनसंख्या संबंधी मान्यताओं का अध्ययन करना।

➢ निम्न सामाजार्थिक स्तर के परिवारों में पायी जाने वाली मान्यताओं के स्वरूप (सकरात्मक अथवा नकारात्मक) को ज्ञात करना।

➢ निम्न सामाजार्थिक परिवारों में व्याप्त मान्यताओं की जीवन के गुणवत्ता के संदर्भ में, प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

परिकल्पना आधारित निष्कर्ष

परिकल्पना – उच्च और निम्न सामाजार्थिक स्तर के परिवारों में जनसंख्या संबंधी मान्यताओं में सार्थक अन्तर पाया गया है।

(अ) उच्च परिवारों की जनसंख्या संबंधी मान्यता से उनके परिवार सीमित है और वे उन मान्यताओं को ध्यान में रखकर ही छोटे परिवार का आदर्श अपनाते हैं।

(ब) निम्न सामाजार्थिक परिवार में अधिक बच्चों की माँग करते हैं जो उच्च परिवारों के विपरीत है वे कहते है–यह भगवान की देन हैं।

परिकल्पना – उच्च और निम्न सामाजार्थिक परिवारों में पायी जाने वाली जनसंख्या संबंधी मान्यताओं का प्रभाव (जीवन की गुणवत्ता पर) में सार्थक अन्तर पाया गया है।

उच्च सामाजार्थिक परिवार में पायी जाने वाली जनसंख्या संबंधी मान्यताओं का प्रभाव जीवन की गुणवत्ता पर पड़ा है जैसे– बच्चों को सुविधायें प्रदान करना, परिवारों में खुशी का माहौल दिखाई देना। बच्चों की इच्छाओं को समझने की कोशिश की गयी।

निम्न सामाजार्थिक परिवार में पायी जाने वाली जनसंख्या संबंधी मान्यताओं का प्रभाव जीवन की गुणवत्ता पर ऋणात्मक पड़ा हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे पाते जिसे प्रमुख कारण है–आर्थिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, बालिकाओं को शिक्षित करने से कोई फायदा नहीं, कृषि हेतु बच्चों की जरूरत होती है।

परिकल्पना – जीवन की गुणवत्ता से संबंधित उच्च एवं निम्न सामाजार्थिक परिवार में सार्थक अन्तर पाया गया।

- **भोजन एवं पोषण–** उच्च परिवारों में सही पोषण लेते हैं जबकि निम्न सामाजार्थिक परिवार में केवल चावल, गेहूँ का ही उपयोग करते हैं।
- **आवास**–निम्न सामाजार्थिक परिवारों में अपर्याप्त आवास व्यवस्था हैं।
- **स्वास्थ्य–** कमजोर स्वास्थ्य है तथा चिकित्सा की अपेक्षा जादू–टोना पर अधिक विश्वास है।
- **शिक्षा की उपलब्धता** – उच्च परिवारों की अपेक्षा निम्न सामाजार्थिक परिवार में शिक्षा की उपलब्धता कम है बच्चों को बहुत कम पढ़ाया गया।
- **पारिवारिक आय की सीमा और बचत के तरीके** – निम्न सामाजार्थिक परिवारों की आय कम होने के कारण बच्चों के खर्चे अधिक होने से बचत नहीं हो पाती हैं।
- **पारिवारिक पर्यावरण की स्थिति–** उच्च सामाजार्थिक परिवारों की अपेक्षा निम्न सामाजार्थिक व ग्रामीण परिवारों में तनाव पूर्ण माहौल पाया गया।

(4) **Title - A reliability and Validity study of two assessment instruments of the home learning environment.**

Year - 2001

Auther - Snowbarger- Kent- Eldon

Abstract - The purpose of the this study was to establish the reliability and criterion-related validity of the instructional Environment system-II (Ysseldyke & Christenson, 1996) and Family School Achievement Survery (Quirk, 1989).

The identified participants in the study were 58 students in third trough fifth grade who had been referred to teacher assistance teams because of poor academic progress or inadequate

classroom adjustment. A "Contrast" group of successful students were included in the study for purposes of comparison.

With some expections for a few of the subsales, test-retest reliability and internal consistency for the FSAS was satisfactory. Interrater reliability for the TIES-II instrument was determined to be inadequate. Due to biased responses on the TIES-II parent questionnaire, the in-depth analyses addressing its validity were not completed. Multiple regression analysis indicated that 15% of the variation in math achievement could be explained ($p<.05$) by FSAS home environmental variables. Multiple regression analyses also indicated that small amounts of the variation in select classroom behavior variables were explained by several of the FSAS home environmental variables. Implications included : (a) cautious use of the TIES-II home assessment instruments because of week reliability and validity, (b) the need for further refinement of some of the FSAS sbscales though most demonstrated adequate temporal stability and internal consistency, (c) indications that the FSAS home environment variables were better predictors of classroom adjustment than academic achievement, (d) evidence that SES variables accounted for variation in achievement.

(5) Title - Cognitive style, home background and conduct behavior in primary school pupils.

Year - 2001

Author - Riding, - Richard- J; Fairhurst, - Pamela

Abstract - The class teacher of 0-9 yr old (Year-4/5) and 10-11 yr old (Year 5/6) primary school pupils were asked to rate

the classroom conduct behavior and home background of their pupils on 5-point scales from very poor through to very good.

There was a significant effect of Wholist-Analytic style on behavior with the Wholists being the worst behaved. There was also an interaction between Gender and Home Background with the females behaving better than the males, and this being most pronounced when the home background was rated as poor. The results were discussed in terms of their implications for teaching and parenting, and their similarities to studies of pupils at the secondary level.

(6) Title - The relationship between home environment and IQ among Saudi Arabian Kindergarten children.

Year - 2002

Author - Al-Hamdan,- Najat- Sulaiman

Abstract - The primary hypothesis in the study was that there is a statistically significant difference in home environment scores between high IQ and low-IQ Saudi Arabian Kindergarten children. The secondary hypotheses examined the eight elements of the Home Observation Measurment of the Environment Inventory (Home) as they related to IQ scores as measured by the Z.A. Intelligence Test (Z.A.). The eight elements of the HOME are learning materials, language stimulation, physical environment responsively, academic stimulation, modeling, variety, and acceptance.

Twelve schools from four school districts in Riyadh, saudi Arabia were chosen to participate in the study using cluster sampling procedures.

Based on the finding of the study, the following conclusions were reached. Saudi Arabian Kindergarten children with high IQs tented to have more stimulating home environment than those with low IQs. Saudi Arabian Kindegraten children with high IQs tended to have more learning materials, greter language stimulation, more positive physical environment, greater responsivity, affection and warmth in the home, greater academic stimulation, models of social maturity, and more positive acceptance by adult than children with low IQs, No differences between high IQ and low IQ children were found in the variety of leazrning experiences in the home.

(7) **Title : A study on perception of primary school children in home environment.**

Year - 2002

Author - Unlu, - Alper; cakir,- Huray

Abstract - Examined environmental qualities surrounding the children's environment and their impact on children's cognition. 77 students aged 8-9 yrs completed a fill in questionnaire and a drawing session of their routes between home and school and the realization of the visual impact on papers. Results indicate the case study exposed different tendencies in understanding and experiencing close environments, especially between male and female students, pedestrians, and students who regularly ride vehicles. Pedestrian students reflected more information about object relations, especially in topological qualities, while students who use service buses or other vehicles reflected more knowledge in relation to the outer limits of locality in their drawings.

(8) **Title : Using a social and emotional skills curriculum to docipher the role family environment plays in social competence among urban elementary school children.**

Year : 2003.

Author : Mokrue,- Kathariya

Abstract : The present study was designed to evaluate the role family environment plays in the development of social competence among urban elementary school children. This study utilized an empirically driven school-based social and emotional skills building curriculum as a frame work for studying this bi-directional relationship.

Data from 655 students from second and third grades from 6 elementary schools in an urban district were collected. Overall, the results of the study supported findings from the existing literature. Correlation analyses revealed that positive family environment was associated with better teach rated social skills, problem behaviors, and academic competence outcomes at both assessment periods. Analyses of Covariance confirmed the hypothesis that students in high implementation group had higher ratings of social skills and lower rating of problem behaviors during post-assessment period while their counterparts received higher ratings of problem behaviors and lower ratings of social competence. Contrary to expectations, positive family environment did not contribute to greater gains in social competence. Rather, children were equally likely to benefit from the curriculum regardless of their home environments.

(9) **Title - Home and school density effects on elementry school children: The role of spatial density.**

Year - 2003

Author - Maxwell,- Lorraine-E

Abstract - School or classroom density is most often studied as social density, namely, the number of people in a space. The current study investigates classroom spatial density effects on elementary school children. Outcomes included a measure of academic achievement, social behavior/disturbance, and a self-reported measure of psychological stress. 73 second- and fourth-grade children in a classroom. girls academic achievment was negatively affected by less space per student; boy's classroom behavior was negatively affected by spatial density conditions. There was no interaction of school and home density on the outcomes measures; however, children in crowded homes were more likely to report more psychological stress than their less crowded peers. Home density also negatively affected academic performance.

(10) **Title : The role environment in the development of readings skills: A longitudinal study of pre school and school- age measures.**

Year - 2003

Author - Molfese - Vctoria- J; Modglin,- Arlene; Molfese- Dennis-L

Abstract - The purpose of this study was to extend previous studies on the influence of environmental measures on intelligence scores by examining how proximal and distal measures of children's environments in the per school period and in the primary-grade period are relatred to thier performance on reading achievement tests.

Participants were 113 children, including 35 children with poor reading skill,s who were part of a longitudinal study of cognitive development. Socioeconomic status (SES), Home observation for Measurement of the Environment (Home) Scores at 3 and 10 years of age, and school administered and individually administered reading achievement scores were obtained. both SES and HOME Scores were found to be related to reading abilities, but pre school environment measures were more strongly and consistently related to and predictive of reading scores.